प्रश्न प्रत्र –2 हल

विषय –हिंदी (आधार)

कक्षा – बारहवीं

Q.1

गुम होता बचपन

कौन है ऐसा ? बढ़ते बस्तें के बोझ से परेशान नहीं है। हाथों की मासूमियत, कन्धों की कोमलता पर लदा पुस्तकों और उत्तर पुस्तिकाओं के बोझ से पूरित बैग बेचारे बच्चे की क्या हालत कर देता है ? वह आसानी से बस्ते के बोझ को उठाते हुए अपनी रीढ़ की हड्डी को भी सीधा नहीं कर पाता। आज की पढ़ाई बच्चे पर किताबों का इतना बोझ लाद देती है कि वह खाना और खेलना भी भूल जाता है। उसका भूलना भी जायज है। एक तो पुस्तकों का बोझ और दूसरी और माता–पिता की महत्वाकांक्षाएँ। इन दोनों के बीच एक मासूम का बचपन दब कर रह जाता है। बच्चा अपने माता पिता की महत्वाकांक्षाओं को ध्यान में रखकर स्कूल से आते ही बस्ता पटकता है। खाना खाने की बात तो अलग, आराम भी नहीं करता है। भारी भरकम बस्ते को खोल कर सबसे पहले गहकार्य करने लगता हैं। विषयों में दिए गहकार्य को कर चुकने के बाद वह अन्य पडौसी खेलते हुए बच्चों की आवाज सुनता है। उसका मन डोलता है। मन के डोलने से क्या होता है ? याद आ जाती हैं ''मेडम'' की। उसकी तस्वीर आँखों में धीरे धीरे उतरने लगती है। गणित की पुस्तक खुल जाती हैं आँखों के सामने टेबल खुलकर आ जाती है और पहाडे याद करना प्रारम्भ हो जाता है। मासूम के मस्तक को खेलते बच्चों की आवाजें प्रभावित करती है। लेकिन उन आवाजों का क्या ? याद करना उसके लिए जरूरी हैं मैडम कल स्कूल पहुचते ही कक्षा में सुनेगी। न सुना पाने पर वह कक्षा से बाहर खड़ा होने के लिए कह देगी। नहीं तो भारी बस्ते को कन्धें पर डाल कर खड़ा होने का दण्ड देगी। कितना भारी है मेरा बस्ता। उसकी अनुभूति तो मै ही कर सकता हूँ। मैं ही उसे लादकर स्कूल और स्कूल से घर लेकर आता हूँ। बच्चा सोचता–सोचता सचेत हो जाता है। पहाड़े याद करने में लग जाता है।

पहाडा याद हो जाने के बाद मासूम के मन पर छायी मासूमियत में सहज मुस्कान छा जाती है। उसे याद आ जाता है आफिस से लौटकर आने वाले पापा का चेहरा। वह बस्ता खोलता है। यह रही हिन्दी की किताब, यह रही विज्ञान की किताब, यह रही सामाजिक विज्ञान की किताब। अब खोजता है। कक्षा कार्य और गह कार्य की उत्तर पुस्तिकाएँ मिल जाती है। याद करना प्रारम्भ कर देता है। याद करना ज्ञान को बढाना है लेकिन पुस्तकों का बोझ उसे दबा देता हैं। पापा आ जाते है, उन्हें सुना देता है। वे खुश हो जाते है। यह सब ठीक है। पढ़ना याद करना पुस्तकों के बोझ में दब जाना। अच्छा तो यह हो कि मासूम बच्चा खेल खेल में सीखे। अपने ज्ञान को बढाएँ। अपने बचपन का आनन्द ले। माता–पिता की महत्वाकांक्षाएँ और विद्यालय का भारी भरकम पाठ्यक्रम उस पर हावी न हो। इसका संयोग न जाने उसे कब प्राप्त होगा ?

पॉलीथीन पर प्रतिबन्ध : एक सराहनीय कदम

विज्ञान की देन हमारे लिए वरदान भी है तो अभिशाप भी। इम देय वरदान से प्रसन्न हुए पर अभिशाप को झेल रहे है। बाजार जाना है जैसे ही आवाज हमारे कानों में पड़ती है। हम उठकर खड़े हो जाते है। पैसे जेब में हो तो थैला लेकर जाने की कोई झंझट ही नहीं। यह झंझट तो पहले थी। जब पॉलीथीन का इतना प्रचलन नहीं था। बाजार पहुँचिए जो खरीदना हो वो खरीद लीजिए। दुकानदार खरीदी हुई चीज को पॉलीथीन में रखकर दे देगा। हाथ से पकड़कर घर ले आइए। सामान के न गिरने का डर, न भीगने का डर।

घर पहुचते ही सामान को पॉलीथीन से बाहर निकालिए। पॉलीथीन का उपयोग खत्म। जहाँ चाहे वहाँ फेकिए। देखिए और सोचिए। बाहर फेंका गया पॉलीथीन का बैग नाली में बहकर पानी के साथ आगे बढ़कर पानी को रोकता है। पानी को रोकने में उसके साथी सहयोग करते है। जो दूसरों के द्वारा इसी प्रकार से फेंके गये। ये बिना बाढ़ के मोहल्ले में बाढ़ का दश्य उपस्थित कर देते है। पानी का रूकना गन्दगी का साम्राज्य फैलना है। मलेरिया फैलने का कारण बनता है। पर्यावरण को प्रदूषित करता है। सुअरों के लोटने और आराम करने का साधन बनता है। बीमारियाँ फैले, इससे उनका कोई सरोकार नहीं। कमी सुअरों की नहीं यह कमी उन सुघडों की है जो थैलियों को बिना सोचे–समझे नाले के पानी में बहा देते है।

हम इस बात में भी भली–भाँति परिचित हैं कि पॉलीथीन ऐसे रसायनों से मिलकर तैयार किया जाता है कि चाहे यह जमीन में कई सालों तक दबा रहे, यह गलता नहीं। हवा–मिट्टी और पानी का इस पर कोई असर नहीं होता है। बेशर्मीपन इसका सबसे बडा अवगुण है। इसमें अवगुणों के अलावा और कुछ भी नहीं हैं। यह जीवन के सहज प्रवाह को रोक लेता है। हवा को पास नहीं होने देता हे। इसको यदि मन्दबु; आदमी पहन ले तो वह श्वास नहीं ले पाता है। भूखे जानवर इसे निगल जाते है। पेट में जाकर यह आँतो में अवरोध उत्पन्न कर देता है। इससे जानवर तड़प–तड़प कर मर जाता है। इसलिए पॉलीथीन अब तो असहनीय हो गया है। सरकारे इसके निर्माण पर बार बार रोक लगांती है। जन–आन्दोलन इसके विरोध में खड़ा हो जाता है। रंग–बिरंगे पॉलीथीन कैंसर के जनक है। इसलिए यह जन जीवन के लिए घातक है। अभी भी समय है कि हम सब इसके भयावह रूप से परिचित हो जाएँ और इसका उपयोग करना बन्द कर दे तो यह हमारे जीवन के लिए उपयोगी रहेगा।

सिमटते गॉव–फैलते शहर/गांव चले शहरों की ओर

महानगर सपनों की तरह है। मनुष्य को ऐसा लगता है मानों स्वर्ग वही है। हर व्यक्ति ऐसे स्वर्ग की और खींचा चला आता हैं चमक–दमक, आकाश छूती इमारतें, सब कुछ पा लेने की चाह, मनोंरजन आदि न जाने बहुत कुछ जिन्हें पाने के लिए गांव का सुदामा लालायित हो उठता है और चल पड़ता है महानगर की ओर आज महानगरों में भीड़ बढ़ रही है। हर ट्रेन, बस में आप यह देख सकते है। गावँ यहाँ तक कि कस्बें का व्यक्ति भी अपनी दरिद्रता को समाप्त करने के ख्वाब लिए महानगरों की तरफ चल पड़ता है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद रोजगार के अधिकाशं अवसर महानगरों में ही मिलते है। इस कारण गांव व कस्बे में शिक्षित व्यक्ति शहरों की तरफ भाग रहा है। इस भाग–दौड़ में वह अपनों का साथ भी छोड़ने को तैयार हो जाता है। दूसरे, अच्छी चिकित्सा सुविधा, परिवहन के साधन, मनोंरजन के अनेक तरीके, बिजली–पानी की कमी न होना आदि अनेक आकर्षक महानगर की ओर पलायन को बढ़ा रहे है। महानगरों की व्यवस्था भी चममराने लगी है। यहाँ के साधन भी भीड़ के सामने बौने हो जाते है। महानगरों का जीवन एक और आकर्षित करता हैं। यह अभिशाप से कम नहीं है। सरकार को चाहिए कि वह विकास कस्बों व गांवों में भी करें। इन क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आदि को सुविधा होने पर पलायन रूक सकता है। यदि बिजली, पानी, शिक्षा और चिकित्सा जैसी सुविधा तो महानगरो में उपलब्ध है, ऐसी ही सुविधाएं यदि गॉव और कस्बों को मिलने लगे तो यह पलायन रूक सकता है।

Q.2 प्रधानाचार्य कार्यालय, रा.उ.मा. विद्यालय, रामगढ़

पत्र क्रमांक : रा.उ.मा./16-07/420 दिनांकः–..........................

श्रीमान सचिव महोदय,

राजस्थान विधान सभा,

राजस्थान सरकार, जयपुर।

विषय : विधान सभा अधिवेशन देखने की अनुमति प्रदान करने हेतु।

मान्यवर,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा ११वीं एवं १२वीं के कला संकाय के छात्र विधान सभा का अधिवेशन प्रत्यक्ष देखना चाहते है। **'विधान सभा की कार्यवाही'** यह प्रकरण छात्रों के पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित है। विधान सभा की कार्यवाही का प्रत्यक्ष अवलोकन कर छात्रों को अपने ज्ञान में अभिवत्ति करने का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

दल के साथ 60 छात्र–छात्राएँ तथा दो अध्यापक सम्मिलित होगें। तिथि तथा समय निर्धारित कर सूचना से अवगत कराये।

भवदीय

हस्ताक्षर

क ख ग

(प्रधानाचार्य)

संलग्न

अथवा

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

राज. उच्च. माध्य. विद्यालय,

रामगढ़।

विषय : विद्यालय में व्याप्त .... सम्बधी अव्यवस्था की ओर ध्यानाकर्षण हेतु।

मान्यवर,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि विगत कई माह से विद्यालय में अव्यवस्था की स्थिति बनी हुई है, जिसके कारण छात्रों को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। यथा कक्षा–कक्ष के छात्र संख्या के अनुपात में पर्याप्त फर्नीचर नहीं है और जो है वह भी अधिकांश टूटा हुआ है। प्रयोगशाला कक्ष की स्थिति भी अच्छी नहीं है। प्रयोगशाला कक्ष में न तो पर्याप्त उपकरण है और न प्रयोग में आने वाली सामग्री ही उपलब्ध रहती है। यहाँ तक कि पुस्तकालय भी अव्यवस्था का शिकार बना हुआ है। हमारे विद्यालय के पुस्तकालय में प्रर्याप्त मात्रा में ज्ञानोपयोगी पुस्तकों का संग्रह है, किन्तु पुस्तकालय का अधिकांश समय बन्द रहना, अव्यवस्थित तरीके से पुस्तकों का रख–रखव, पुस्तकालय अध्यक्ष का छात्रों के साथ उपेक्षित व्यवहार जैसे कुछ ऐसे कारक है जिनके कारण छात्र पुस्तकालय सुविधा का यथोचित लाभ नहीं उठा पाते है। खेल सम्बन्धी गतिविधियाँ तो जैसे बन्द प्रायः पड़ी है। विद्यालय में पर्याप्त खेल का मैदान उपलब्ध है। खेल सामग्री क्रय करने हेतु शारीरिक शिक्षक की उदासीनता एवं उत्साह हीनता के कारण खेल कूद सम्बन्धी गति विधियाँ संचालित नहीं हो पा रही है।

अतः आपसे निवेदन है कि इस ओर ध्यान देकर अव्यवस्थित व्यवस्था को दुरस्त कर सुचारू ढंग से क्रियान्वित किये जाने का प्रयास करें ताकि छात्र प्राप्त सुविधाओं से लाभान्वित हो सकें।

दि. .... आपका आज्ञाकारी शिष्य,

क ख ग

Q.3

(i) कहानी में पात्रों अथवा चरित्रों का बहुत महत्त्व है –. पात्र कहानी के मूलाधार होते हैं।. पात्र कहानी को गतिशीलता प्रदान करते हैं।. पात्र कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करते हैं।. पात्र पाठकों को संदेश देते हैं।. पात्र कहानी को समापन की ओर ले जाते हैं।

अथवा

नाटक में पात्रों का बहुत महत्त्व है नाटक में चित्रित पात्र चरित्रवान होने चाहिए। पात्र आदर्शवादी होने चाहिए। पात्र अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के होने चाहिए। पात्र जीवंत तथा जीवन से जुड़े होने चाहिए। पात्र सामाजिक परिवेश से जुड़े होने चाहिए। पात्र कथानक से संबंधित होने चाहिए।

(ii) संपादकीय को किसी समाचार–पत्र की आवाज माना जाता है। यह एक निश्चित पृष्ठ पर छपता है। यह अंश समाचारपत्र को पठनीय तथा अविस्मरणीय बनाता है। संपादकीय से ही समाचार–पत्र की अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ (गुणवत्ता) का निर्धारण किया जाता है। समाचार–पत्र के लिए इसकी महत्ता सर्वोपरि है।

अथवा

सार्थक आलेख में नवीनता एवं ताजगी होती। सार्थक आलेख जिज्ञासाशील ,विचार स्पष्ट और बेबाकीपूर्ण होता है ।भाषा सहज, सरल और प्रभावशालीहोती है। विश्लेषण शैली का प्रयोगहोता है। आलेख प्राय ज्वलंत मुद्दों, विषयों और महत्त्वपूर्ण चरित्रों पर लिखा जाता है। आलेख का आकार विस्तार पूर्ण नहीं होता है आलेख में संबंधित बातों का पूरी तरह से उल्लेख हो।

Q.4

(i) एक अच्छे फीचर में मनोरंजक होना चाहिए।ज्ञानवर्धक होना चाहिए। मानवीय रुचि पर आधारित होना चाहिए। चित्रात्मक भाषा शैली होनी चाहिए। कल्पना का समावेश भी आवश्यक है।जिससे रुचि उत्पन्न हो। भावात्मक, तर्कसंगत, गतिशील शैलीविचित्रता, रोचकता के गुण से परिपूर्ण हो, तथ्य व उनके प्रभाव सही हो, आंकड़ा सही हो अन्यथा झूठा एवं अविश्वसनीय माना जाता है। इसलिए तथ्य ठीक रहना चाहिए। फीचर में ज्ञान व भावना , संवेदना जगाने की कला भी निहित हो।

अथवा

समाचार लेखन के लिए छः सूचनाओं का प्रयोग किया जाता है। ये छः सूचनाएँ–क्या हुआ, कब हुआ, किसके (कौन) साथ हुआ, कहाँ हुआ, क्यों और कैसे हुआ प्रश्नों के उत्तर में प्राप्त होती हैं। यही छः ककार कहलाती हैं। इनमें से प्रथम चार ककार (क्या, कब, कौन, कहाँ) सूचनात्मक व अन्तिम दो ककारे (क्यों, कैसे) विवरणात्मक होते हैं। समाचार को प्रभावी एवं पूर्ण बनाने के लिए ही इन छः ककारों का प्रयोग किया जाता है। प्रथम चार ककार समाचार का इण्ट्रो (मुखड़ा) व अन्तिम दो ककार बॉडी व समापन को निर्माण करते हैं।

(ii) रेडियो एक श्रव्य माध्यम है जिसकी पहुँच दूर–दराज में रहने वाले आम जन तक है। मुद्रित माध्यम जहाँ केवल साक्षर वर्ग के लिए उपयोगी होता है वहीं रेडियो इस सीमा को तोड़ता हुआ साक्षर व निरक्षर दोनों वर्गों के लिए उपयोगी होता है। रेडियो के लिए लेखन करते समय श्रोता वर्ग को ध्यान में रखते हुए सहज, सरल और प्रवाहमान भाषा का प्रयोग करना चाहिए। समाचारवाचक को कोई परेशानी न हो इसके लिए समाचार की साफ–सुथरी टाइप्ड कॉपी तैयार करनी चाहिए। बड़ी संख्याओं को शब्दों में लिखा जाना चाहिए। अत्यावश्यक आँकड़ों का ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

अथवा

आलेख गंभीर व व्यंगपूर्ण होता है जबकि फीचर में हास्य और मनोरंजन।फीचर 250 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए जबकि आलेख बड़ा भी हो सकता है।आलेख को संपूर्ण जानकारी और तथ्यों के आधार पर भी लिख सकते हैं, जबकि फीचर के लिए आपको आंख, कान, भाव, अनुभूतियां और मनोवेग, आदि की सहायता लेनी पड़ती है।फीचर विषय से संबंधित व्यक्तिगत अनुभूतियों पर आधारित विशिष्ट आलेख होता है जिसमें कल्पनाशीलता और सृजनात्मक कौशल होनी चाहिए जबकि आलेख में विषय पर तथ्यात्मक, विश्लेषणात्मक अथवा विचारात्मक जानकारी होती है कल्पना का स्थान नहीं होता है।

Q.5

(i) 'उषा' कविता में प्रातःकालीन नभ की तुलना राख से लीपे गए गीले चौके से की है। इस समय आकाश नम तथ धुंधला होता है। इसका रंग राख से लिपे चूल्हे जैसा मटमैला होता है। जिस प्रकार चूल्हा चौका सूखकर साफ़ हो जाता है, उसी प्रकार कुछ देर बाद आकाश भी स्वच्छ एवं निर्मल हो जाता है।

(ii) लक्ष्मण शक्तिबाण लगने से मूर्चिछत हो गए। यह देखकर राम भावुक हो गए तथा सोचने लगे कि पत्नी के बाद अब भाई को खोने जा रहे हैं। केवल एक स्त्री के कारण मेरा भाई आज मृत्यु की गोद में जा रहा है। यदि स्त्री खो जाए तो कोई बड़ी हानि नहीं होगी, परंतु भाई के खो जाने का कलंक जीवनभर मेरे माथे पर रहेगा। वे सामाजिक अपयश से घबरा रहे थे।

(iii) 'खुद का पर्दा खोलने' मुहावरे का प्रयोग उन लोगों के लिए किया गया है जो दूसरों की निंदा करते हैं। सच्चाई तो यह है कि ऐसे लोग अपनी छोटी सोच का उद्घाटन करते हैं। इससे हमें बिना बताए लोग अपने चरित्र के बारे में बता देते हैं। कवि बताते हैं कि निंदा करना बुरी बात होती है।

Q.6

(i) महामारी के वक्त भुखमरी , गरीबी और सही उपचार न मिलने के कारण लोग रोज मर रहे थे। घर के घर खाली हो रहे थे और लोगों का मनोबल दिन प्रतिदिन टूटता जा रहा था।ऐसे में लुट्टन सिंह की ढोलक की आवाज निराश, हताश , कमजोर और अपनों को खो चुके लोगों में संजीवनी भरने का काम करती थी। पहलवान की ढोलक की आवाज ही लोगों को उनके जिंदा होने का एहसास दिलाती थी।अपने दोनों बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन सिंह ढोल बजाता रहा ताकि गांव वालों के मन में उत्साह का संचार होता रहे और वो अपने लोगों की मृत्यु से निराश व हताश न हो।

(ii) सभी कानूनों से ऊपर दया, प्रेम व इंसानियत को माना गया है। और इंसानियत की भावना को दुनिया में सबसे श्रेष्ठ स्थान दिया गया है क्योंकि इंसानियत से ही दुनिया के सभी लोगों को अपना बनाया जा सकता है। सबको प्रेम, भाईचारा, सद्भावना के मजबूत बंधन में बंधा जा सकता हैं। बिना इंसानियत के तो इंसान पशु के समान ही है। इसीलिए सफिया कहती हैं कि सारे कानून हुकूमत के नहीं होते हैं बल्कि ये दुनिया प्रेम, मोहब्बत, इंसानियत के कानूनों पर ही टिकती व चलती है।

(iii) जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण है क्योंकि भारतीय समाज में श्रम विभाजन का आधार जाति है, चाहे श्रमिक कार्य कुशल हो या नहीं उस कार्य में रुचि रखता हो या नहीं इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जब श्रमिकों कार्य करने में न दिल लगे ना दिमाग तो कोई कार्य कुशलता पूर्वक कैसे प्राप्त कर सकता है यही कारण है कि भारत में जतिप्रथा बेरोजगारी का प्रत्यक्ष और प्रमुख कारण बना हुआ है।

(iv) सर्दी के मौसम में फैली हुई इस महामारी में पूरा गांव किसी नन्हें शिशु की तरह कांप रहा था। भुखमरी , गरीबी और सही उपचार न मिलने के कारण लोग मर रहे थे। सूर्योदय होते ही लोग एक दूसरे को साँत्वना देते हुए सामान्य जीवन जीने की कोशिश करते थे। रात में किसी परिजन की मृत्यु होने पर सुबह उसके अंतिम संस्कार के कार्य में जुट जाते थे। सूर्यास्त होने के बाद पूरे गांव में खामोशी छा जाती थी। कभी–कभी किसी बच्चे की अपनी माँ को पुकारने की आवाज या किसी व्यक्ति द्वारा भगवान को पुकारने की आवाज ही सुनाई देती थी।

Q.7

(i) सिंधु–सभ्यता के शहर मुअनजो–दड़ो की व्यवस्था, साधन और नियोजन के विषय में चर्चा हुई है। इस बात से सभी प्रभावित हैं कि वहाँ की अन्न–भंडारण व्यवस्था, जल–निकासी की व्यवस्था अत्यंत विकसित और परिपक्व थी। हर निर्माण बड़ी बुद्धमानी के साथ किया गया था; यह सोचकर कि यदि सिंधु का जल बस्ती तक फैल भी जाए तो कम–से–कम नुकसान हो। इन सारी व्यवस्थाओं के बीच इस सभ्यता की संपन्नता की बात बहुत ही कम हुई है। वस्तुतः इनमें भव्यता का आडंबर है ही नहीं। व्यापारिक व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है, मगर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। संभवतः वहाँ की लिपि पढ़ ली जाने के बाद इस विषय में अधिक जानकारी मिले।

अथवा

ऐन फ्रैंक की डायरी से हमें उसके जीवन व तत्कालीन परिवेश का परिचय मिलता है। इसमें ऐतिहासिक द्वितीय विश्व युद्ध की घटनाओ, नाजियों के अत्याचारों आदि का वर्णन मिलता है, साथ ही ऐन के निजी सुख–दुख व भावनात्मक क्षण भी व्यक्त हुए हैं। ऐन ने यहूदी परिवारों की अकथनीय यंत्रणाआँ व पीडाओं का चित्रण किया है। गुप्त स्थानों पर छिपे रहना, गोलीबारी का आतंक, भूख, गरीबी, बीमारी, मानसिक तनाव, जानवरों जैसा जीवन, चोरी का भय, नाजियों का आतंक आदि अमानवीय दृश्य मिलते हैं। साथ ही ऐन का अपने परिवार, विशेषतः माँ और सहयोगियों से मतभेद, डाँट–फटकार, खीझ, निराशा, एकांत का दुख, दूसरों द्वारा स्वय पर किए गए आक्षेप, प्रकृति के लिए बेचैनी, पीटर के साथ सबंध आदि का वर्णन मिलता है। उसके व्यक्तिगत सुख–दुख भी इन पृष्ठों में युद्ध की विभीषिका में एकमेक हो गए हैं। इस प्रकार यह डायरी एक ऐतिहासिक दस्तावेज होते हुए भी ऐन के व्यक्तिगत सुख–दुख और भावनात्मक उथल–पुथल को व्यक्त करती है।

(ii) सिंधु–सभ्यता से जो अवशेष प्राप्त हुए हैं उनमें औजार तो हैं, पर हथियार नहीं हैं। मुअनजो–दड़ो, हड़प्पा से लेकर हरियाणा तक समूची सिंधु–सभ्यता में हथियार उस तरह नहीं मिले हैं जैसे किसी राजतंत्र में होते हैं। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना–स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रासाद मिले हैं, न मंदिर, न राजाओं व महतों की समाधियाँ। मुअनजो–दड़ो से मिला नरेश के सिर का मुकुट भी बहुत छोटा है। इन सबके बावजूद यहाँ ऐसा अनुशासन जरूर था जो नगर–योजना, वास्तु–शिल्प, मुहर–ठप्पों, पानी या साफ़–सफ़ाई जैसी सामाजिक व्यवस्थाओं में एकरूपता रखे हुए था। इन आधारों पर विद्वान यह मानते हैं कि यह सभ्यता समझ से अनुशासित सभ्यता थी, न कि ताकत से।

अथवा

ऐन की डायरी से पता चलता है कि वह एक संवेदनशील व अंतर्मुखी लड़की थी। अज्ञातवास में आठ सदस्य रह रहे थे जिनमें वह सबसे छोटी थी। वह तेरह वर्ष की थी। अतः भावनाओं के वेग का सर्वाधिक होना स्वभाविक है। हालाँकि यहाँ पर उसकी भावनाओं को समझने वाला कोई नहीं है। वह कहती भी है–"काश, कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफ़सोस, ऐसा व्यक्ति अब तक नहीं मिला है, इसलिए तलाश जारी रहेगी।" ऐन खुद को औरों से बेहतर समझती है। पीटर से भी वह खुलकर बात नहीं करती। वह अपनी प्रिय व एकांत की सहयोगिनी गुड़िया से बात करती है तथा चिट्ठी के रूप में अपनी भावनाएँ व्यक्त करती है।